औषधीय खरपतवार देते हैं मुक्ति कृमि रोगों से

* 80 प्रकार की वनौषधियों का पारंपरिक उपयोग

* कृमि को कई रोगों की जड़ माना जाता है

आंतो के कीड़ों को बाहर निकालने के लिये नवगठित राज्य छत्तीसगढ़ के पारंपरिक चिकित्सक 80 प्रकार की वनौषधियों का प्रयोग करते हैं। इन वनौषधियों मे अधिक्तर खरपतवारों के रुप मे उगती है। राज्य में वनौषधियों से संबंधित पारंपरिक ज्ञान के दस्तावेजीकरण मे जुटे वनौषधि विशेषज्ञ पंकज अवधिया ने यह जानकारी दी।

छत्तीसगढ़ के विभिन्न भागों मे किये जा रहे इथनोबॉटनेकिल सर्वेक्षणों के आधार पर पंकज अवधिया ने बताया कि खरीफ मे औषधीय खरपतवार गुम्मा और रबी मे बेमची और बथुआ की सहायता से कृमियों का उपचार किया जाता ह। कृमि रोग से सुरक्षा के लिये राज्य के ग्रामीण और वनीय अंचलों के निवासी गुम्मा और बथुआ को साग की तरह प्रयोग कर रहे है। यह पीढ़ीयों पुराना पारंपरिक ज्ञान है। पारंपरिक चिकित्सक कृमियों को कई रोगों की जड़ मानते है। इनमे श्वेत कुष्ठ (ल्यूकोडर्मा) प्रमुख है। इस त्वचा रोग की चिकित्सा मे कृमियों को नष्ट करने वाली वनौषधियों का प्रमुखता से उपयोग होता है। राज्य मे बथुआ के बीजों से निकाला गया तेल का प्रयोग भी आंतरिक रुप से कृमियों को नष्ट करने मे होता है। राज्य के घने वनों मे प्राकृतिक रुप से उगने वाली वनौषधि वायविंडग का प्रयोग पारंपरिक चिकित्सकों के बीच लोकप्रिय हैं। इस वनौषधि की दो जातियाँ पाई जाती है और दोनों ही का प्रयोग कृमिनाशक के रुप मे होता है। कई पारंपरिक चिकित्सक दोनो जातियों के फलों को मिलाकर प्रयोग करते है। इससे अधिक लाभदायी प्रभाव मिलता है। छत्तीसगढ़ के मैदानी भागों के पारंपरिक चिकित्सक बड़ , पीपल और गूलर जैसे वृक्षों की जड़ों के नये अंकुरों का प्रयोग कृमिनाशक के रुप मे करते है।नरहरपुर क्षेत्र के पारंपरिक चिकित्सकों के बीच भिलावा नामक वनौषधि का प्रयोग लोकप्रिय है। उत्तरी छत्तीसगढ़ मे अनार के विभिन्न पौध भागों का प्रयोग घरेलू औषधि के रुप में होता है। गंडई - सालेवारा क्षेत्र के पारंपरिक चिकित्सक मैनफल नामक वनौषधि का प्रयोग चूर्ण के रुप मे करते है। इस वनौषधि के उपयोग से पहले पौधों को विभिन्न सत्वों से सिंचित किया जाता है जिससे उनके औषधीय तत्व सक्रिय हो जाते है। दक्षिण छत्तीसगढ़ मे परसा की जड़ों का प्रयोग लोकप्रिय है। अधिक लाभ के लिये पारंपरिक चिकित्सक इसे अन्य वनौषधियों के साथ मिलाकर देते है। बेल की पत्तियों का आंतरिक प्रयोग भी प्रचलन मे है। 80 प्रकार की वनौषधियों मे ज्यादातर कंदीली वनौषधियाँ है जिनमे से बहुत सी वनौषधियों की वानस्पतिक पहचान अभी तक नही हो पायी है। इस दिशा मे प्रयास जारी है। वनौषधियों के अलावा घरेलू नुस्खों से संबंधित पारंपरिक ज्ञान भी राज्य मे समृद्ध है। पंकज अवधिया घरेलू नुस्खों के दस्तावेजीकरण की प्रक्रिया में जुटे हुए है।